अध्याय-15

मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

जब कोई वाक्यांश अपने प्रचलित अर्थ को अभिव्यक्त न कर किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाए, तब वह मुहावरा कहलाता है। जैसे–'नौ दो ग्यारह होना' मुहावरा गणितीय संक्रिया को न बताकर 'भाग जाना' अर्थ को घोषित करता है। ठीक वैसे ही 'दाँत खट्टे करना' नामक मुहावरा स्वाद के खट्टेपन को न बताकर किसी को 'बुरी तरह हराना' नामक अर्थ अभिव्यक्त करता है।

लोकोक्ति शब्द दो शब्दों के मेल से बना है—लोक + उक्ति। लोक में चिरकाल से प्रचलित कथन लोकोक्ति कहलाता है। लोकोक्ति का संबंध किसी घटित घटना से होता है।

लोकोक्तियों एवं मुहावरों के प्रयोग से भाषा प्रभावोत्पादक बनती है। लोकोक्ति को 'कहावत' नाम से भी जाना जाता है।

अंतर–

— मुहावरा वाक्यांश होता है जबकि लकोक्ति अपनेआप में पूर्ण होती है।

— मुहावरे में लिंग, वचन और काल आदि के अनुसार कुछ परिवर्तन आ जाता है जबकि लोकोक्ति मे वाक्य में प्रयुक्त होने पर भी किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं आता है।

— मुहावरे के अंत में साधारणतया क्रिया सूचक शब्द जैसे–करना, होना आदि प्रयुक्त होते हैं जबकि लोकोक्ति में ऐसा नहीं होता है।

— मुहावरे भाषा की लाक्षणिकता को दर्शाते हैं जबकि लोकोक्तियाँ समाज के भाषायी इतिहास को अभिव्यक्त करती हैं।

मुहावरे

1. अंक भरना — स्नेहपूर्वक गले मिलना
2. अंग-अंग ढीला होना — बहुत थक जाना
3. अंगारे उगलना — क्रोध में कटु वचन कहना
4. अंधा बनना — जानते हुए भी ध्यान न देना
5. अंधे की लाठी होना — एकमात्र सहारा
6. अंधेर खाता होना — सही हिसाब न होना
7. अक्ल का दुश्मन होना — मूर्ख होना
8. अक्ल के घोड़े दौड़ाना — केवल कल्पनाएँ करना।

9. अक्ल के पीछे लट्ठ लिए घूमना — बुद्धि विरुद्ध कार्य करना
10. अगर-मगर करना — बहाने बनाना
11. अड़ियल टट्टू होना — जिद्दी होना
12. अपना उल्लू सीधा करना — अपना स्वार्थ सिद्ध करना
13. अपना सा मुँह लेकर रह जाना — किसी अकृत कार्य के कारण लज्जित होना
14. अपनी खिचड़ी अलग पकाना — साथ मिलकर न रहना, अलग रहना
15. अपने तक रखना — किसी दूसरे से न कहना
16. अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना — अपना नुकसान स्वयं करना
17. अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना — अपनी प्रशंसा स्वयं करना
18. आँखें खुलना — सजग या सावधान होना
19. आँखें चार होना — आमना-सामना होना
20. आँखें चुराना — नजर बचाना
21. आँच न आने देना — जरा भी कष्ट न आने देना
22. आँखों में खून उतरना — अत्यधिक क्रोध करना
23. आँखों में धूल झोंकना — धोखा देना
24. आँखों का तारा — अत्यन्त प्यारा
25. आँखें बिछाना — प्रेमपूर्वक स्वागत करना
26. आँखों पर परदा पड़ना — भले-बुरे की परख न होना
27. आँच न आने देना — जरा भी कष्ट न आने देना
28. आँचल पसारना — प्रार्थना करना
29. आँसू पोंछना — धीरज व ढाढस बँधाना
30. आँधी के आम होना — सस्ती चीजें
31. आकाश के तारे तोड़ना — असंभव कार्य को अंजाम देना
32. आईने में मुँह देखना — अपनी योग्यता की जाँच कर लेना
33. आग बबूला होना — अत्यधिक क्रोध करना
34. आग में घी डालना — क्रोध को बढ़ाने का कार्य करना
35. आटे-दाल का भाव मालूम होना — जीवन के यथार्थ को जानना
36. आग लगने पर कुआँ खोदना — मुसीबत के समय उपाय खोजना
37. आड़े आना — बाधक बनना
38. आकाश टूटना — अचानक बड़ी विपत्ति आना
39. आपे से बाहर होना — वश में न रह पाना

41. आसमान सिर पर उठाना — अत्यधिक शोर करना
42. आठ-आठ आँसू रोना — बुरी तरह रोना या पछताना
43. आस्तीन का साँप होना — कपटी मित्र
44. इतिश्री होना — अंत या समाप्त होना
45. इधर-उधर की हाँकना — व्यर्थ की बातें करना
46. ईंट का जवाब पत्थर से देना — करारा जवाब देना
47. ईंट से ईंट बजाना — कड़ा मुकाबला करना
48. ईद का चाँद होना — बहुत दिनों बाद दिखना
49. इशारों पर नचाना — किसी को अपनी इच्छानुसार चलाना
50. उंगली उठाना — निन्दा करना या आरोप लगाना
51. उगल देना — सारा भेद प्रकट कर देना
52. उंगली पर नचाना — किसी अन्य के इशारे पर चलना
53. उड़ता तीर झेलना — अनावश्यक विपत्ति मोल लेना
54. उड़ती चिड़िया पहचानना — थोड़े इशारे में ही सब कुछ समझ लेना
55. उन्नीस बीस का फर्क होना — मामूली अन्तर
56. उल्टी गंगा बहाना — रीति विरुद्ध कार्य करना
57. उल्लू बनाना — मूर्ख बनाना

अन्य मुहावरे

एक आँख से देखना — समदृष्टि या समभाव होना
एड़ी चोटी का जोर लगाना — बहुत प्रयास करना
एक ही थाली के चट्टे-बट्टे होना — समान प्रवृत्ति के होना
एक लाठी से हाँकना — सबके साथ एक-सा व्यवहार करना
ऋण उतारना — कर्ज अदा करना
ऋण मढ़कर जाना — अपना कर्ज किसी अन्य पर डालना
एक और एक ग्यारह होना — संगठन में शक्ति होना
उल्टी पट्टी पढ़ाना — गलत शिक्षा देना
उल्टी माला फेरना — अहित सोचना
ओखली में सिर देना — जान-बूझकर विपत्ति मोल लेना
औने-पौने करना — कम लाभ या कम कीमत में बेच देना
कच्चा चिट्ठा खोलना — रहस्य बताना
कमर कसना — तैयार होना

कलेजा ठंडा होना	—	मन को शांति मिलना
कागजी घोड़े दौड़ाना	—	केवल कागजी कार्रवाई करना
काठ का उल्लू होना	—	महामूर्ख होना, वज्र मूर्ख
कान खड़े होना	—	चौकन्ना होना
कान पकड़ना	—	गलती स्वीकार करना
कान में तेल डालकर बैठना	—	सुनकर भी अनसुना करना
क्रोध काफूर होना	—	गुस्सा गायब होना
काल कवलित होना	—	मर जाना
किताबी कीड़ा होना	—	हर समय पढ़ने में लगे रहना
कूच करना	—	चले जाना
कोढ़ में खाज होना	—	दु:ख में और दु:ख आना
कमर कसना	—	किसी कार्य के लिए तैयार होना
कलेजा मुँह को आना	—	घबरा जाना
कान का कच्चा होना	—	जल्दी किसी के बहकावे में आना
कान भरना	—	चुगली करना
कोल्हू का बैल होना	—	निरंतर काम में जुटे रहना
कौड़ी के मोल बेचना	—	अत्यन्त सस्ता होना
कान पर जूँ तक न रेंगना	—	कोई असर न पड़ना
कंधे से कंधा मिलाना	—	साथ देना
कन्नी काटना	—	आँख बचाकर निकलना
कान कतरना	—	चतुराई दिखाना
कलेजे का टुकड़ा होना	—	बहुत प्रिय
कान खोलना	—	सावधान करना
कुँए में भांग पड़ना	—	सबकी मति भ्रष्ट होना
कीचड़ उछालना	—	अपमानित/बेइज्जत करना
कतर ब्योंत करना	—	काट-छाँट करना
कफन की कौड़ी न होना	—	दरिद्र होना
कब्र में पाँव लटकना	—	मृत्यु के निकट होना
कमर कसना	—	तैयार होना
कान भर जाना	—	सुनते सुनते पक जाना
काम निकालना	—	अपना मतलब पूरा करना

किला फतेह करना	—	किसी कठिन कार्य में सफलता प्राप्त करना
खाल खींचना	—	बहुत मारना
खाट पकड़ लेना	—	बहुत बीमार पड़ जाना
खरी-खोटी कहना	—	भला-बुरा कहना
खाक छानना	—	मारे-मारे फिरना, निरुद्देश्य भटकना
खेत रहना	—	युद्ध में मारे जाना
खाक में मिलना	—	नष्ट होना
खून खौलना	—	अत्यधिक क्रोध आना
खून-पसीना एक करना	—	कठोर परिश्रम करना
ख्याली पुलाव पकाना	—	कोरी (व्यर्थ) कल्पनाएँ करना
खून का घूँट पीकर रह जाना	—	चुपचाप गुस्सा सहन कर लेना
खरी-खरी सुनाना	—	साफ-साफ कहना
खून सूखना	—	भयभीत होना
खटाई में पड़ना	—	कार्य में व्यवधान आना
खिचड़ी पकाना	—	गुप्त योजना बनाना
गंगा नहाना	—	किसी कठिन कार्य को पूर्ण करना
गड़े-मुर्दे उखाड़ना	—	पुरानी बातें करना
गले मढ़ना	—	जबरन कार्य सौंपना
गागर में सागर भरना	—	थोड़े शब्दों में बहुत कुछ कह देना
गाजर मूली समझना	—	तुच्छ समझना, मामूली मानना
गाल बजाना	—	बढ़-चढ़कर बातें करना
गुड़ गोबर करना	—	बना कार्य बिगाड़ देना
गिरगिट की तरह रंग बदलना	—	अवसरवादी होना
गाँठ बाँधना	—	स्थायी रूप से याद रखना
गाँठ पड़ना	—	द्वेष का स्थायी होना
गूदड़ी का लाल होना	—	गरीबी में भी गुणवान होना
गंगा नहाना	—	दायित्व से मुक्ति मिलना
गाल फुलाना	—	गुस्सा होना
घोड़े बेचकर सोना	—	निश्चिंत होकर सोना
घुटने टेकना	—	हार मानना
घी के दीये जलना	—	खुशियाँ मनाना

घड़ों पानी पड़ना	—	लज्जित होना
घर फूँककर तमाशा देखना	—	अपना नुकसान होने पर भी मौज करना
घाट-घाट का पानी पीना	—	स्थान-स्थान का अनुभव होना
घास काटना	—	बिना गुणवत्ता कार्य करना
घाव हरा होना	—	भूला दुख-दर्द याद आना
घर बसाना	—	विवाह कराना
चींटी के पर निकलना	—	मृत्यु के दिन समीप आना
चल बसना	—	मृत्यु होना
चैन की बंशी बजाना	—	मौज करना
चोली दामन का साथ होना	—	बहुत निकटता
चिकना घड़ा होना	—	कुछ भी असर न होना, बेशर्म होना
चाँदी का जूता मारना	—	घूस (रिश्वत) देना
चार चाँद लगना	—	शोभा में वृद्धि होना
चादर से बाहर पैर पसारना	—	आय से ज्यादा खर्च करना
चूना लगाना	—	नुकसान करना
चिराग तले अंधेरा होना	—	अपने दोष न देख पाना
चार दिन की चाँदनी होना	—	अल्पकालीन सुख
चूड़ियाँ पहनना	—	कायरता दिखाना
चारों खाने चित्त होना	—	बुरी तरह हारना
चंगुल में फँसना	—	पकड़ में आना
चक्की पीसना	—	जेल की सजा भुगतना
चिकना देख फिसल पड़ना	—	किसी के रूप या धन पर लुभा जाना
चित्त उचटना	—	मन न लगना
छक्के छुड़ाना	—	बुरी तरह हराना
छठी का दूध याद आना	—	संकट में पड़ना
छाती पर मूँग दलना	—	साथ रहकर परेशान करना
छप्पर फाड़कर देना	—	बिना परिश्रम बहुत देना
छाती पर पत्थर रखना	—	धैर्यपूर्वक कष्ट सहन करना
छाती पर साँप लौटना	—	ईर्ष्या करना
छाँह तक न छूने देना	—	समीप न आने देना
छँटे-छँटे फिरना	—	दूर-दूर रहना

छठे छमासे आना	—	कभी-कभी आना
छप्पर पर फूस न होना	—	अत्यन्त गरीब होना
छाती ठोकना	—	कठिन कार्य हेतु प्रतिज्ञा करना
छींकते नाक कटना	—	छोटी बात पर चिढ़ना
जले पर नमक छिड़कना	—	दुखी व्यक्ति को और दुखी करना
जान हथेली पर रखना	—	मृत्यु की परवाह न करना
जहर का घूँट पीकर रह जाना	—	कड़वी बात सहन करना
जहर उगलना	—	कड़वी बातें कहना
जी तोड़कर काम करना	—	बहुत परिश्रम करना
जान पर खेलना	—	साहसी कार्य करना
जिन्दा मक्खी निगलना	—	स्पष्ट दिखता हुआ अन्याय सहन करना
जी चुराना	—	कार्य से स्वयं को अलग रखना
जहर उगलना	—	अपमानजनक बातें कहना
जड़ काटना	—	समूल नष्ट करना
जमीन आसमान एक करना	—	सभी उपाय करना
जमीन आसमान का अंतर	—	बड़ा भारी अन्तर
जान के लाले पड़ना	—	प्राण संकट में पड़ना
जूतियाँ चाटना	—	चापलूसी करना
जंजाल में पड़ना	—	संकट में पड़ना
जलती आग में कूदना	—	जान-बूझकर विपत्ति में पड़ना
जिन्दगी के दिन पूरे करना	—	मृत्यु के दिन समीप होना
जिल्लत उठाना	—	अपमानित होना
जी छोटा करना	—	हृदय के उत्साह में कमी
जूठे हाथ से कुत्ता न मारना	—	अत्यधिक कंजूस होना
झंडा गाड़ना	—	अधिकार करना
टाँग अड़ाना	—	बाधा डालना
टेढ़ी उँगली से घी निकालना	—	चतुराई से काम निकालना
टेढ़ी खीर होना	—	कठिन काम
टोपी उछालना	—	अपमानित करना
टका सा जवाब देना	—	साफ-साफ मना करना
टका सा मुँह लेकर रह जाना	—	लज्जित होना

टक्कर लेना	—	मुकाबला करना
टस से मस न होना	—	अपने इरादे से न हटना
ठीकरा फोड़ना	—	दोष लगाना, आरोप लगाना
ठोड़ी पर हाथ धरे बैठना	—	चिंतामग्न बैठना
ठकुर सुहाती बातें करना	—	चापलूसी करना
ठगा-सा रह जाना	—	किंकर्त्तव्यविमूढ़ होना
डींग हाँकना	—	व्यर्थ गप्पे लगाना
डकार जाना	—	किसी की वस्तु हड़प लेना
डंका बजना	—	प्रभाव होना
डंके की चोट कहना	—	खुले आम कहना/खुल्लम खुल्ला कहना
डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाना	—	सबसे अलग राय होना
ढाई दिन की बादशाहत करना	—	थोड़े समय का ऐश्वर्य मिलना
ढिंढोरा पीटना	—	अति प्रचारित करना
ढोल में पोल होना	—	सारहीन होना
तलवे चाटना	—	खुशामद करना
तिल का ताड़ करना	—	छोटी सी बात को बढ़ाना
तूती बोलना	—	प्रभाव होना
तलवार के घाट उतारना	—	मार देना
तितर-बितर होना	—	बिखर जाना
तख्ता उलटा	—	सरकार बदलना
तेली का बैल होना	—	हर समय काम में जुटे रहना
तेवर चढ़ना	—	गुस्सा आना
तह तक पहुँचना	—	बात का ठीक से पता लगाना
ताँता बँधना	—	आने का क्रम न रुकना
तारे गिनना	—	बैचेनी से रात गुजारना
ताव देखना	—	अंदाजा लगाना
थूक कर चाटना	—	अपनी बात से फिरना
थाह लेना	—	भेद पता करना
दाँत खट्टे करना	—	परास्त करना
दाँतों तले उँगली दबाना	—	आश्चर्यचकित होना
दाहिना हाथ होना	—	विश्वासपात्र होना

दाल में काला होना	—	शक होना
दाई से पेट छिपाना	—	जानकार से बात छिपाना
दो टूक बात कहना	—	स्पष्ट कहना
दूध के दाँत न टूटना	—	अनुभवहीन होना
दिन दूना रात चौगुना होना	—	शीघ्र होने वाली वृद्धि
दीया लेकर ढूँढना	—	ठीक तरह से खोजना
दिन फिरना	—	अच्छा समय आना
दोनों हाथों में लड्डू होना	—	लाभ ही लाभ होना
दिन-रात एक करना	—	बहुत परिश्रम करना
दाल गलना	—	काम बनना
दबी जबान से कहना	—	अस्पष्ट कहना
दाँत कुरेदने को तिनका न होना	—	सब कुछ चले जाना
दाना-पानी छोड़ना	—	अन्न-जल त्यागना
दाल-रोटी चलना	—	जीविका निर्वाह करना
दाँव चूकना	—	अवसर हाथ से निकल जाना
धूप में बाल सफेद न करना	—	अनुभवशून्य न होना
धज्जियाँ उड़ाना	—	ध्वस्त करना, दुर्गति करना
धरती पर पाँव न पड़ना	—	अभिमानी होना
नाक कटना	—	बेइज्जत करना
नकेल डालना	—	वश में करना
नाक रगड़ना	—	किसी की खुशामद करना
नाक-भौं सिकोड़ना	—	घृणा करना
नानी याद आना	—	संकट का अहसास होना, घबरा जाना
नौ दो ग्यारह होना	—	भाग जाना
नाच नचाना	—	परेशान करना
नब्ज पहचानना	—	ठीक से जानना, स्वभाव पहचानना
नहले पर दहला होना	—	करारा जवाब देना
नमक-मिर्च लगाना	—	बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना
नाक रखना	—	इज्जत बचाना
पगड़ी उछालना	—	बेइज्जत करना
पहाड़ टूट पड़ना	—	बड़ी विपत्ति आना

पेट पालना	—	जीवन यापन करना
पेट में दाढ़ी होना	—	बचपन से ही चतुर होना
पापड़ बेलना	—	बहुत मेहनत करना
प्राण हथेली पर रखना	—	प्राणों की परवाह न करना
पानी-पानी होना	—	लज्जित होना
पाँचों उंगलियाँ घी में होना	—	सब ओर से लाभ ही लाभ होना
पेट काटना	—	अत्यधिक कंजूसी करना
पानी में आग लगाना	—	असंभव कार्य करना
पीठ दिखाना	—	भाग जाना या पलायन करना
पेट में चूहे कूदना	—	भूख लगना
पलक पावड़े बिछाना	—	प्रेमपूर्वक स्वागत करना
फूँक मारना	—	भड़काना
फूँक-फूँक कर कदम रखना	—	सावधानीपूर्वक कार्य करना
फूल झड़ना	—	मधुर वचन बोलना
बंदर घुड़की	—	असरहीन धमकी
बच्चों का खेल	—	आसान काम
बड़े घर की हवा खाना	—	जेल जाना
बाएँ हाथ का खेल	—	आसान काम
बाँछें खिलना	—	प्रसन्न होना
बालू से तेल निकालना	—	असंभव कार्य करना
बट्टा लगाना	—	कलंकित करना
बाजी मारना	—	जीत जाना
बाल की खाल निकालना	—	सूक्ष्म अन्वेषण
बीड़ा उठाना	—	कार्य का संकल्प लेना
बातें बनाना	—	बहाना करना
बालू की भीत होना	—	शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तु
बेड़ा पार होना	—	कष्ट से मुक्ति होना
बाल बाँका न होना	—	कोई नुकसान न होना
भंडा फोड़ना	—	भेद खोलना
भौंह तानना	—	क्रुद्ध होना
भाड़ झौंकना	—	व्यर्थ समय गँवाना

भिड़ के छत्ते को छेड़ना	—	झगडालू व्यक्ति को चिढ़ाना
मुँह की खाना	—	हारना, बुरी तरह पराजित होना
मुँह काला करना	—	कलंकित होना, बदनामी होना
मुट्ठी गर्म करना	—	रिश्वत देना
मक्खीचूस होना	—	अत्यधिक कंजूस होना
मन मारना	—	कामनाओं पर नियंत्रण करना
मक्खी मारना	—	फालतू बैठना
मुट्ठी में करना	—	वश या नियंत्रण में करना
मर-पचना	—	बहुत कष्ट सहना
मशाल लेकर ढूँढना	—	अच्छी तरह खोजना
मौका देखना	—	अवसर की तलाश में रहना
मैदान मारना	—	जीतना
यमलोक भेजना	—	मार डालना
यश कमाना	—	प्रतिष्ठा प्राप्त करना
रंगा सियार होना	—	धूर्त होना
रंग में भंग होना	—	खुशी के अवसर पर कोई विघ्न आना
राई का पहाड़ करना	—	छोटी बात को बड़ी करना
रौंगटे खड़े होना	—	रोमांचित होना
रंगे हाथों पकड़ना	—	अपराधी को अपराध करते हुए पकड़ना
रास्ता देखना	—	प्रतीक्षा करना
रंग चढ़ना	—	प्रभाव पड़ना
रुपया ठीकरी करना	—	अपव्यय करना
रोब जमाना	—	धाक जमाना
रोब मिट्टी में मिलना	—	प्रभाव खत्म होना
लाल पीला होना	—	क्रोध करना
लोहा मानना	—	स्वीकार करना, बहादुरी स्वीकारना
लहू का घूँट पीना	—	चुपचाप अपमान सहना
लकीर का फकीर होना	—	पुरातनपंथी होना
लट्टू होना	—	रीझना
लोहे के चने चबाना	—	कठिन कार्य करना
लोहा लेना	—	मुकाबला करना

शेर के कान कतरना	—	चालाक होना
श्रीगणेश करना	—	शुभारंभ करना
शीशे में मुँह देखना	—	अपनी योग्यता पर जाना
सफेद झूठ	—	बिल्कुल झूठ
सब्जबाग दिखाना	—	झूठे आश्वसन देना, झूठे स्वप्न दिखाना
सिर आँखों पर लेना	—	सम्मान देना
सिर मुँडाते ही ओले गिरना	—	कार्य प्रारम्भ करते ही बाधा आना
सिर उठाना	—	विरोध करना
सूखकर काँटा होना	—	अत्यधिक दुर्बल
सूरज को दीपक दिखाना	—	प्रसिद्ध व्यक्ति का परिचय देना
सिक्का जमाना	—	प्रभाव जमाना
सोने में सुगंध होना	—	एक वस्तु में एकाधिक गुण
हवा से बातें करना	—	तेज गति से चलना
हथियार डालना	—	हार मानना
हवाई किले बनाना	—	व्यर्थ कल्पनाएँ करना
हाथ खींचना	—	सहायता बंद करना
हाथ पीले करना	—	विवाह करना
हथियार डालना	—	हार मानना
हाथ-पाँव फूल जाना	—	घबरा जाना
हाथ का मैल होना	—	तुच्छ वस्तु
हाथ मलना	—	पश्चाताप करना
हाथ को हाथ न सूझना	—	घना अन्धकार होना
हवन करते हाथ जलना	—	भलाई करते बुरा होना
हाथ बँटाना	—	मदद करना
हाथ पैर मारना	—	प्रयास करना

लोकोक्तियाँ

- अंधा क्या चाहे दो आँखें। — बिना प्रयास इच्छित फल की प्राप्ति।
- अंधेर नगरी चौपट राजा। — अयोग्य प्रशासन
- अंधा बाँटे रेवड़ी फिर-फिर अपने को देय। — अधिकार मिलने पर स्वार्थी व्यक्ति अपने लोगों की ही मदद करता है।

• अंधे के हाथ बटेर लगना।	• बिना परिश्रम के अयोग्य व्यक्ति को सुफल की प्राप्ति।
• अंधों में काना राजा।	• मूर्खों के बीच अल्पज्ञ भी बुद्धिमान माना जाता है।
• अधजल गगरी छलकत जाय।	• अल्पज्ञ अपने ज्ञान पर अधिक इतराता है।
• अपनी करनी पार उतरनी।	• मनुष्य को स्वयं के कर्मों के अनुसार ही फल मिलता है।
• अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।	• अकेला आदमी बड़ा काम नहीं कर सकता है।
• अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।	• हानि हो जाने के बाद पछताना व्यर्थ है।
• अंडे सेवे कोई, बच्चे लेवे कोई।	• परिश्रम कोई करे फल किसी अन्य को मिले।
• अंधे के आगे रोना, अपना दीदा खोना।	• सहानुभूतिहीन या मूर्ख व्यक्ति के सामने अपना दुखड़ा रोना व्यर्थ है।
• अक्ल बड़ी या भैंस	• शारीरिक बल की अपेक्षा बुद्धिबल श्रेष्ठ होता है।
• अटका बनिया देव उधार।	• मजबूर व्यक्ति अनचाहा कार्य भी करता है।
• अपना रख पराया चख।	• स्वयं के पास होने पर भी किसी अन्य की वस्तु का उपभोग करना।
• अपनी-अपनी ढपली, अपना-अपना राग।	• तालमेल न होना।
• अरहर की टट्‌टी गुजराती ताला।	• बेमेल प्रबंध, सामान्य चीजोंकी सुरक्षा में अत्यधिक खर्च करना।
• अपना हाथ जगन्नाथ।	• अपना कार्य स्वयं करना ही उपयुक्त रहता है।
• आँख का अंधा, गाँठ का पूरा।	• बुद्धिहीन किन्तु सम्पन्न।
• आँख बची और माल यारों का।	• ध्यान हटते ही चोरी हो सकती है।
• आधी छोड़ पूरे ध्यावे, आधी मिले न पूरे पावै।	• अधिक के लोभ में उपलब्ध वस्तु या लाभ को भी खो बैठना।
• आम के आम गुठलियों के दाम।	• दुगुना लाभ।
• आए थे हरिभजन को, ओटन लगे कपास।	• बड़े उद्देश्य को लेकर कार्य प्रारम्भ करना किन्तु छोटे कार्य में लग जाना।
• आगे कुआँ पीछे खाई।	• सब ओर कष्ट ही कष्ट होना।
• आ बैल मुझे मार।	• जान-बूझकर विपत्ति मोल लेना।

• आगे नाथ न पीछे पगहा।	• पूर्णतः बंधन रहित/बेसहारा।
• आठ वार नौ त्योहार।	• मौजमस्ती से जीवन बिताना।
• आप भले तो जग भला।	• स्वयं भले होने पर आपको भले लोग ही मिलते हैं।
• आसमान से गिरा, खजूर में अटका।	• काम पूरा होते-होते व्यवधान आ जाना।
• आठ कनौजिये नौ चूल्हे।	• अलगाव या फूट होना।
• इन तिलों में तेल नहीं।	• कुछ मिलने या मदद की उम्मीद न होना।
• इधर कुआँ उधर खाई।	• सब ओर संकट।
• उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना।	• थोड़ी सी मदद पाकर अधिकार जमाने की कोशिश करना।
• उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई।	• एक बार इज्जत जाने पर व्यक्ति निर्लज्ज हो जाता है।
• उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।	• दोषी व्यक्ति द्वारा निर्दोष पर दोषारोपण करना।
• उल्टे बाँस बरेली को।	• विपरीत कार्य करना।
• ऊँट के मुँह में जीरा।	• आवश्यकता अधिक आपूर्ति कम।
• ऊँची दुकान फीका पकवान।	• मात्र दिखावा।
• ऊँट किस करवट बैठता है।	• परिणाम किसके पक्ष में होता है/अनिश्चित परिणाम।
• ऊधो का लेना न माधो का देना।	• किसी से कोई लेना-देना न होना।
• उधार का खाना फूस का तापना।	• बिना परिश्रम दूसरों के सहारे जीने का निरर्थक प्रयास करना।
• ऊधो की पगड़ी, माधो का सिर।	• किसी एक का दोष दूसरे पर मढ़ना।
• एक अनार सौ बीमार।	• वस्तु अल्प चाह अधिक लोगों की।
• एक तो करेला दूसरा नीम चढ़ा।	• एकाधिक दोष होना
• एक गंदी मछली सारे तालाब को गंदा करती है।	• एक व्यक्ति की बुराई से पूरे परिवार/समूह की बदनामी होना।
• एक तो चोरी दूसरे सीना-जोरी।	• अपराध करके रौब जमाना।
• एक म्याँन में दो तलवारें नहीं समा सकती।	• दो समान अधिकार वाले व्यक्ति एक साथ कार्य नहीं कर सकते।
• एकै साधे सब सधै, सब साधे जब जाय।	• एक समय में एक ही कार्य करना फलदायी

	होता है।
• एक ही थैली के चट्टे-बट्टे होना।	• समान दुर्गुण वाले एकाधिक व्यक्ति।
• एक पंथ दो काज।	• एक कार्य से दोहरा लाभ।
• एक हाथ से ताली नहीं बजती।	• केवल एक पक्षीय सक्रियता से काम नहीं होता।
• ओछे की प्रीत बालू की भीत।	• ओछे व्यक्ति की मित्रता क्षणिक होती है।
• ओस चाटे प्यास नहीं बुझती।	• अल्प साधनों से आवश्यकता या कार्य पूरा नहीं हो पाता है।
• ओखली में सिर दिया तो मूसल का क्या डर।	• कठिन कार्य का जिम्मा लेने पर कठिनाइयों से डरना नहीं चाहिए।
• कंगाली में आटा गीला।	• संकट में एक और संकट आना।
• कभी गाड़ी नाव पर, कभी नाव गाड़ी पर।	• परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं।
• करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।	• अभ्यास द्वारा जड़ बुद्धि वाले व्यक्ति भी बुद्धिमान हो सकता है।
• करे कोई भरे कोई।	• किसी अन्य की करनी का फल भोगना।
• कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानुमति ने कुनबा जोड़ा।	• बेमेल वस्तुओं के योग से सब कुछ बनाना।
• कौवों के कोसे ढोर नहीं मरते।	• बुरे आदमी के बुरा कहने से अच्छे आदमी की बुराई नहीं होती।
• काला अक्षर भैंस बराबर।	• अनपढ़ होना।
• कुम्हार अपना ही घड़ा सराहता है।	• अपनी वस्तु की सभी प्रशंसा करते हैं।
• कोयले की दलाली में हाथ काला।	• कुसंग का बुरा प्रभाव पड़ता ही है।
• कौआ चले हंस की चाल।	• किसी और का अनुसरण कर अपनापन खोना
• काबुल में क्या गधे नहीं होते।	• मूर्ख सभी जगह मिलते हैं।
• कभी घी घना तो कभी मुट्ठी चना।	• परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं, सदैव एक-सी नहीं रहती।
• खग ही जाने खग की भाषा।	• अपने लोग ही अपने लोगों की भाषा समझते हैं।
• खरबूजे को देख खरबूजा रंग बदलता है।	• देखा-देखी परिवर्तन आना।

• खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे।	• असफलता से लज्जित व्यक्ति दूसरों पर क्रोध करता है।
• खोदा पहाड़ निकली चुहिया।	• अधिक परिश्रम पर अल्प लाभ।
• खुदा की लाठी में आवाज नहीं होती।	• ईश्वर किसे, कब, क्या सजा देगा उसे कोई नहीं जानता।
• खुदा देता है तो छप्पर फाड़कर देता है।	• ईश्वर की कृपा से व्यक्ति कभी भी मालामाल हो जाता है।
• गंगा गए गंगादास जमुना गए जमुनादास।	• सिद्धान्तहीन अवसरवादी व्यक्ति।
• गरीब की जोरू सबकी भाभी।	• कमजोर आदमी पर सभी रोब जमाते हैं।
• गुड़ दिए मरे तो जहर क्यों दे।	• जब प्रेम से कार्य हो जाए तो क्रोध क्यों करें।
• गुड़ न दे, पर गुड़ की सी बात तो करे।	• कुछ अच्छा दे न दे पर अच्छी बात तो करे।
• गुरुजी गुड़ ही रहे, चेले शक्कर हो गए।	• छोटे व्यक्ति का अपने बड़ों से आगे निकलना।
• गोद में छोरा (लड़का) शहर में ढिंढोरा।	• पास रखी वस्तु को दूर-दूर तक खोजना।
• घड़ी में तोला घड़ी में मासा।	• अस्थिर मनोवृत्ति।
• घर का भेदी लंका ढाए।	• आपसी फूट का बुरा परिणाम होना।
• घर की मुर्गी दाल बराबर।	• अपनी वस्तु की कद्र न करना।
• घर खीर तो बाहर खीर।	• अपने पास कुछ होने पर ही बाहर भी सम्मान मिलता है।
• घर में नहीं दाने बुढ़िया चली भुनाने।	• झूठा दिखावा करना।
• घोड़ा घास से यारी करे तो खाए क्या।	• मजदूरी लेने में संकोच कैसा
• घर का जोगी जोगना आन गाँव का सिद्ध।	• बाहरी व्यक्ति को अधिक सम्मान देना।
• चंदन की चुटकी भली, गाड़ी भर न काठ।	• श्रेष्ठ वस्तु थोड़ी मात्रा में होने पर भी अच्छी लगती है।
• चट मंगनी पट ब्याह।	• तुरंत कार्य संपादित करना।
• चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय।	• अत्यधिक कंजूस।
• चाँद को भी ग्रहण लगता है।	• भले आदमियों को भी कष्ट सहने पड़ते हैं।
• चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात।	• अल्पकालीन सुख।
• चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता।	• निर्लज्ज व्यक्ति पर किसी बात का प्रभाव नहीं पड़ता है।

• चोरी का माल मोरी में।	• बुरी कमाई का बुरे कार्यों में खर्च होना।
• चोर–चोर मौसेरे भाई।	• दुष्ट लोगों में मित्रता होना।
• चूहे के चाम से नगाड़े नहीं मढ़े जाता।	• अल्प साधनों से बड़ा काम संभव नहीं होता।
• चोर को कहे चोरी कर, साहूकार को कहे जागते रहो	• दो पक्षों को आपस में भिड़ाना।
• चोर की दाढ़ी में तिनका।	• दोषी अपने दोष का संकेत दे देता है।
• छछूंदर के सिर में चमेली का तेल।	• कुपात्र द्वारा श्रेष्ठ वस्तु का भोग करना।
• छोटा मुँह बड़ी बात।	• सामर्थ्य से अधिक डींग हाँकना।
• छोटे मियाँ तो छोटे मियाँ, बड़े मियाँ सुभानल्लाह।	• छोटे की तुलना में बड़े में ज्यादा अवगुण होना।
• जंगल में मोर नाचा किसने देखा।	• गुणों का प्रदर्शन उपयुक्त स्थल पर ही करना चाहिए।
• जब तक जीना तब तक सीना।	• जीवन पर्यन्त व्यक्ति को काम धंधा करना होता है।
• जब तक साँस तब तक आस।	• अंतिम समय तक आशा बनी रहना।
• जल में रहकर मगर से बैर।	• साथ रहकर दुश्मनी ठीक नहीं।
• जहाँ गुड़ होगा, वहाँ मक्खियाँ होंगी।	• जहाँ आकर्षण होगा वहाँ लोग एकत्र होते ही हैं।
• जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि।	• कवि की कल्पना का विस्तार सभी जगहों तक होता है।
• जहाँ मुर्गा नहीं होता, क्या वहाँ सवेरा नहीं होता।	• संसार में किसी के अभाव में कोई कार्य नहीं रुकता।
• जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।	• कठिन परिश्रम से ही सफलता संभव होती है।
• जिस थाली में खाना उसी में छेद करना।	• उपकार करने वाले व्यक्ति का अहित सोचना।
• जिसकी लाठी उसी की भैंस।	• शक्तिशाली की विजय होती है।
• जाके पैर न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई।	• जिसने कभी दुख न भोगा हो, वह दूसरों की पीड़ा नहीं जान सकता।
• जीती मक्खी नहीं निगली जाती।	• जानते हुए गलत को नहीं स्वीकारा जा सकता।

• जो गुड़ खाये सो कान छिदाए।	• लाभ के लालच के कारण कष्ट सहना पड़ता है।
• झूठ के पैर नहीं होते।	• झूठ ज्यादा टिकाऊ नहीं होता।
• झटपट की घानी आधा तेल आधा पानी।	• जल्दबाजी में किया गया काम बेकार होता है।
• झोंपड़ी में रहकर महलों के ख्वाब।	• सामर्थ्य से अधिक चाहना।
• टेढ़ी उँगली किए बिना घी नहीं निकलता।	• सीधेपन से काम नहीं चलता।
• टके की हांडी गई पर कुत्ते की जात पहचान ली।	• थोड़ी सी हानि के द्वारा धोखेबाज को पहचानना।
• ठंडा लोहा गरम लोहे को काट देता है।	• शांत व्यक्ति क्रोधी व्यक्ति पर भारी पड़ता है।
• ठोकर लगे पहाड़ की तोड़े घर की सील।	• बाहर के बलवान व्यक्ति से चोट खाने का गुस्सा घर के लोगों पर निकालना।
• डूबते को तिनके का सहारा।	• संकट के समय में थोड़ी सी सहायता भी लाभप्रद होती है।
• ढाक के तीन पात।	• सदा एक सी स्थिति।
• ढोल के भीतर पोल।	• दिखावटी वैभव या शान।
• तीन लोक से मथुरा न्यारी।	• सबसे अलग विचार रखना।
• तू डाल-डाल मैं पात-पात।	• चतुराई करना।
• तेल देखो तेल की धार देखो।	• कार्य होने व उसके परिणाम की प्रतीक्षा करना।
• तेली का तेल जले मशालची का दिल जले।	• खर्च कोई करे, परेशान कोई और हो।
• तेते पाँव पसारिये, जेती लंबी सौर।	• सामर्थ्य के अनुसार खर्च करना।
• तन पर नहीं लत्ता, पान खाये अलबत्ता।	• अभावों में भी झूठी शान का प्रदर्शन।
• तबेले की बला बंदर के सिर।	• किसी का दोष किसी दूसरे पर मढ़ना।
• तेली के बैल को घर ही पचास कोस।	• घर में ही कार्य की अधिकता होना।
• थका ऊँट सराय ताकता।	• थकने पर सभी को विश्राम चाहिए।
• थोथा चना बाजे घना।	• अल्पज्ञानी व्यक्ति अधिक डींगें हाँकता है।
• दबी बिल्ली चूहों से कान कतराती है।	• दोषी व्यक्ति अपने से कमजोर के आगे भी झुकता है।
• दान की बछिया के दाँत नहीं	• मुफ्त में मिली वस्तु के गुण-दोष नहीं

गिने जाते। | देखे जाते।
- दाल-भात में मूसलचंद। — अनावश्यक दखल देने वाला।
- दिल्ली अभी दूर है। — सफलता अभी दूर है।
- दुधारू गाय की लात भी सहनी पड़ती है। — जिस व्यक्ति से लाभ हो उसका गुस्सा भी सहना पड़ता है।
- दुविधा में दोने गए माया मिली न राम। — दुविधाग्रस्त स्थिति में कुछ भी फल लाभ संभव नहीं होता।
- दूर के ढोल सुहावने होते हैं। — दूर से वस्तुएँ अच्छी लगती हैं।
- देसी कुतिया, विलायती बोली। — किस अन्य की नकल करना।
- दूध का जला, छाछ को भी फूँक-फूँक कर पीता है। — एक बार ठोकर खाया व्यक्ति आगे विशेष सावधानी बरतता है।
- धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का। — दो पक्षों से जुड़ा व्यक्ति कहीं का नहीं रहता।
- धोबी पर बस न चला तो गधे के कान उमेठे। — सामर्थ्यवान पर बस न चलने पर कमजोर पर रौब जमाना।
- धोबी रोवे धुलाई को, मियाँ रोवे कपड़े को। — अपने-अपने नुकसान की चिंता करना।
- धन का धन गया, मीत की मीत गई। — उधार के कारण धन व मित्रता दोनों नहीं रहते।
- न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी। — अनहोनी शर्त रखना।
- नक्कारखाने में तूती की आवाज। — बड़ों के बीच छोटे आदमी की बात कोई नहीं सुनता है।
- न सावन सूखौं न भादौं हरी। — सदैव एकसी स्थिति।
- न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी। — झगड़े के कारण को समाप्त करना।
- नाच न जाने आँगन टेढ़ा। — स्वयं के दोष छिपाने हेतु दूसरों में कमियाँ ढूँढना।
- नेकी कर कुए में डाल। — भलाई करके भूल जाना।
- नेकी और पूछ-पूछ। — अच्छे कार्य के लिए किसी से पूछने की आवश्यकता नहीं होती।
- नीम हकीम खतरे जान। — अधूरा ज्ञान हानिकारक होता है।
- नौ नकद तेरह उधार। — भविष्य में बड़े लाभ की आशा की अपेक्षा

आज होने वाला छोटा काम बेहतर होता है।

- नौ दिन चले अढ़ाई कोस। — अधिक समय में थोड़ा काम।
- नौ सौ चूहे खाय बिल्ली हज को चली। — बड़ा पाप करने के बाद पुण्य का ढोंग करना।
- न ऊधौ का लेना न माधो का देना। — किसी से कोई मतलब न होना।
- नमाज छोड़ने गए रोजे गले पड़े। — छोटे कार्य से मुक्ति के प्रयास में बड़े कार्य का जिम्मा गले पड़ना।
- नानी के आगे ननिहाल की बातें। — जानकार को जानकारी देना।
- नाई की बरात में सब ठाकुर ही ठाकुर। — सभी बड़े बन बैठते हैं तो काम नहीं हो पाता है।
- नाम बड़े और दर्शन छोटे। — प्रसिद्धि अधिक किन्तु गुण कम।
- पढ़े तो हैं किन्तु गुने नहीं। — शिक्षित किन्तु अनुभवहीन।
- पराया घर थूकने का भी डर। — दूसरों के घर हर बात का संकोच रहता है।
- पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होती। — सब लोग एक से नहीं होते।
- पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं। — पराधीनता में सुख नहीं होता।
- प्यादे से फरजी भयो टेढ़ो-टेढ़ो जाय। — छोटा आदमी बड़ा पद पाकर इतराता है।
- फटा दूध और फटा मन फिर नहीं मिलता। — एक बार मतभेद होने पर पुनः पहले-सा मेल नहीं होता।
- फरा सो झरा, बरा सो बुताना। — जो फला है वह झड़ेगा और जला हुआ भी बुझेगा (सभी का अंत निश्चित है)।
- पर उपदेश कुशल बहुतेरे। — दूसरों को उपदेश देने में सब चतुर होते हैं।
- बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद। — मूर्ख व्यक्ति अच्छी वस्तु की महत्ता नहीं जानता है।
- बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी। — जिसे कष्ट पाना है वह ज्यादा समय तक नहीं बच सकता।
- बासी बचे न कुत्ता खाय। — जरूरत अनुसार कार्य करना।
- बिल्ली के भाग से छींका टूटना। — बिना प्रयास अयोग्य व्यक्ति को श्रेष्ठ वस्तु मिलना।
- बोया पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से होय। — बुरे काम का अच्छा परिणाम संभव नहीं।
- बैठे से बेगार भली। — फालतू या बेकार बैठने की अपेक्षा सामान्य

(कम लाभ) कार्य करना भी बेहतर होता है।

• बारह बरस पीछे घूरे के भी दिन फिरते हैं।	• एक न एक दिन सभी के जीवन में अच्छे दिन आते हैं।
• बाप भला न भइया, सबसे बड़ा रुपइया।	• रिश्तों की अपेक्षा पैसों को अहमियत देना।
• बाप ने मारी मेंढकी बेटा तीरंदाज।	• परिवार के मुखिया के अयोग्य होने पर भी संतान का योग्य होना।
• बिच्छू का मंतर न जाने, साँप के बिल में हाथ डाले।	• योग्यता के अभाव में भी कठिन कार्य का जिम्मा लेना।
• भेड़ की लात घुटने तक।	• कमजोर व्यक्ति किसी का अधिक नुकसान नहीं कर सकता।
• भागते भूत की लंगोटी ही सही।	• जिनसे कुछ मिलने की अपेक्षा न हो उससे थोड़ा भी मिल जाए तो बेहतर।
• भूखे भजन न होय गोपाला।	• भूख के समय दूसरा कुछ ठीक नहीं लगता।
• भैंस के आगे बीन बजाए, भैंस खड़ी पगुराय।	• मूर्ख के सम्मुख ज्ञान की बातें करना व्यर्थ है।
• मन चंगा तो कठौती में गंगा।	• मन की पवित्रता महत्वपूर्ण है।
• मरता क्या न करता।	• मुसीबत में व्यक्ति गलत कार्य भी करता है।
• मान न मान मैं तेरा मेहमान।	• जबरदस्ती गले पड़ना।
• मियाँ बीबी राजी तो क्या करेगा काजी।	• दो लोगों में आपसी प्रेम है तो तीसरा रोक भी नहीं सकता।
• मुख में राम, बगल में छुरी।	• मित्रता का दिखावा कर मन में धूर्तता रखना।
• मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।	• उत्साह से ही सफलता संभव होती है।
• मेरी बिल्ली मुझ से ही म्याऊँ।	• आश्रयदाता पर रौब जमाना।
• मन के लड्डुओं से पेट नहीं भरता।	• केवल कल्पनाओं से तृप्ति संभव नहीं होती है।
• मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक।	• सीमित सामर्थ्य होना।
• मन भावै मूँड हिलावै।	• मन से चाहना किन्तु ऊपर से दिखावे के लिए मना करना।
• मुँह माँगी मौत नहीं मिलती।	• अपनी इच्छा से ही सब कुछ नहीं होता।
• यह मुँह और मसूर की दाल।	• हैसियत से बढ़कर बात करना।
• यथा नाम तथा गुण।	• नाम के अनुसार गुण होना।

• यथा राजा तथा प्रजा।	• जैसा स्वामी वैसा सेवक।
• रस्सी जल गई पर बल न गया।	• प्रतिष्ठा चले जाने पर भी घमंड बने रहना।
• रोज कुआँ खोदना, रोज पानी पीना।	• प्रतिदिन कमाकर जीवन यापन करना।
• लकड़ी के बल बंदर नाचे।	• भय के कारण काम करना।
• लोहे को लोहा ही काटता है।	• बुराई को बुराई से ही जीता जा सकता है।
• लातों के भूत बातों से नहीं मानते।	• दुष्ट व्यक्ति भय से ही मानते है मात्र कहने से नहीं।
• लिखे ईसा पढ़े मूसा।	• ऐसी लिखावट जिसे पढ़ा न जा सके।
• विनाशकाले विपरीत बुद्धि।	• प्रतिकूल समय में विवेक भी जाता रहता है।
• विधि का लिखा को मेटन हारा।	• भाग्य का लिखा कोई बदल नहीं सकता।
• साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।	• बिना किसी नुकसान के कार्य पूर्ण करना।
• साँप छछूँदर की गति होना।	• दुविधा में होना।
• सावन के अंधे को हरा ही हरा दिखता है।	• सुख-वैभव में पले व्यक्ति को दूसरों के कष्टों का अनुमान नहीं हो सकता।
• सब धान बाईस पंसीर।	• अच्छे-बुरे की परख न कर सबको समान समझना।
• समरथ को नहीं दोष गुसाईं।	• सामर्थ्यवान व्यक्ति को कोई भी कुछ नहीं कहता।
• सइयाँ भए कोतवाल तो अब डर काहे का।	• अपने व्यक्ति के बड़े पद पर होने पर लोग उसका अनुचित लाभ उठाते हैं।
• सहज पके सो मीठा होय।	• उचित प्रक्रिया से किया गया कार्य ही ठीक होता है।
• हल्दी लगे न फिटकरी रंग चोखा आ जाये।	• बिना खर्च के कार्य का अच्छी तरह से संपादन करना।
• हथेली पर सरसों नहीं उगती।	• प्रत्येक कार्य पूर्ण होने में एक निश्चित समय लगता है।
• हाथ कंगन को आरसी क्या।	• प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती।
• हाथी के दाँत खाने के और तथा दिखाने के और।	• कपटपूर्ण व्यवहार या कथनी-करनी मे अन्तर होना।

• होनहार बीरवान के होत चिकने पात।	• महान व्यक्तियों के श्रेष्ठ गुणों के लक्षण बचपन से ही दिखाई पड़ने लगते हैं।
• हाथ सुमरिनी बगल कतरनी।	• छल-कपट का व्यवहार।

अभ्यास प्रश्न

प्र. 1. 'बहुत दिनों बाद दिखाई देना' को दर्शाने वाला मुहावरा है–

(अ) ईद का चाँद होना (ब) आँखें चार होना

(स) कलेजा ठंडा होना (द) पौ बारह होना [ ]

प्र. 2. 'फूला न समाना' मुहावरे का सही अर्थ होगा–

(अ) कलंकित करना (ब) बहुत प्रसन्न होना

(स) खूब मौज होना (द) उत्तरदायित्व लेना [ ]

प्र. 3. 'काम बिगड़ने पर पछताने से कोई लाभ नहीं' को दर्शाने वाली लोकोक्ति है–

(अ) अंधेर नगरी चौपट राजा (ब) कंगाली में आटा गीला

(स) अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत

(द) कोयलों की दलाली में हाथ काला [ ]

प्र. 4. सिद्धांतहीन अवसरवादी व्यक्ति को दर्शाने वाली लोकोक्ति है–

(अ) घर का भेदी लंका ढाए

(ब) ऊधौ का लेना न माधो का देना

(स) आँख का अंधा नाम नयनसुख

(द) गंगा गए गंगादास, जमुना गए जमुनादास [ ]

उत्तर–1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (द)

प्र. 5. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखिए–

(i) कमर कसना

(ii) चल बसना

(iii) घड़ों पानी पड़ना

(iv) दाल में काला होना

(v) तिल का ताड़ बनाना

प्र. 6. निम्नलिखित लोकोक्तियों के अर्थ लिखिए व वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(i) अशर्फियाँ लुटे, कोयलों पर मोहर

(ii) जैसी करनी वैसी भरनी

(iii) छछूंदर के सिर में चमेली का तेल

(iv) घर फूँककर तमाशा देखना

(v) आप भले तो जग भला